"माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत अध्यापकों की शिक्षण शैली का अध्ययनरत विद्यार्थियों की अधिगम उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन"

शिक्षाशास्त्र विभाग

ल0 ना0 मिथिला विश्वविद्यालय,
कामेश्वरनगर, दरभंगा

के शिक्षा संकाय के अंतर्गत

पी.एच.डी. हेतु प्रस्तुत

शोध प्रारूप

शोध निर्देशक
डा0 कल्याणी कुमारी
सहायक प्राध्यापक
डा0 जाकिर हुसैन टी0 ट्रेनिंग कॉलेज
लहेरियासराय, दरभंगा

शोधार्थी
पाखी कुमारी
PAT 2021-22
Roll No. 22060289
Class Roll - 26

Scanned with OKEN Scanner

शोध विषय :

''माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत अध्यापकों की शिक्षण शैली का अध्ययनरत विद्यार्थियों की अधिगम उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।''

Introduction :

शिक्षण शैली एक मनोवैज्ञानिक एवं शिक्षा शास्त्रीय प्रतिमान या सिद्धांत है जिसका अनुपालन अध्यापक द्वारा छात्रों को ज्ञान प्रदान करने के लिए किया जाता है। कक्षा में अध्यापक अपने अनुभवों, विचारों तथा अर्जित ज्ञान के द्वारा छात्रों को ज्ञान देने तथा उनकी शैक्षिक कठिनाइयों का समाधान करने के लिए जिस विधि या सिद्धांत का अनुसरण करते हैं उसे शिक्षण शैली/अध्यापन शैली (Teaching Style) कहा जाता है। यह प्रक्रिया उस मार्ग की ओर संकेत करते हैं जिसका अनुशरण करने पर विद्यार्थियों की शिक्षण–अधिगम (Teaching) की प्रक्रिया सुगम, रुचिकर, प्रभावशाली और वैज्ञानिक बन जाती है।

इस प्रक्रिया में शिक्षण सिद्धान्तों (Maxims of Teaching) का उपयोग वांछित रहता है, जैसे–पाठ्य सामग्री का प्रस्तुतिकरण सरल से कठिन की ओर, ज्ञात से अज्ञात की ओर, मूर्त से अमूर्त की ओर सम्पूर्ण से खंड की ओर, विशेष ज्ञान से सामान्य ज्ञान की ओर, प्रत्यक्ष ज्ञान से अप्रत्यक्ष ज्ञान की आरे, अनुभूति से युक्ति–युक्त की ओर, विश्लेषण से संश्लेषण की ओर, अनिश्चित से निश्चित की ओर, वर्तमान से भविष्य की ओर, तथा छात्रों की प्रकृति के अनुसार शिक्षा देना आदि आते है। अर्थात शिक्षण क्षरा अनुभूत विषय–वस्तु की अभिव्यक्ति को सुंदर एवं प्रभावपूर्ण बनाने वाले तरीके को एक शब्द में शिक्षण शैली कहा जाता

पारबी कुमारी

है। इस सिद्धान्तों या प्रतिमानों का प्रस्तुतिकरन किस विधि से किया जाय इसका निर्णय स्वयं करते है।

शिक्षण शैली को परिभाषित करते हुए Sternberg (1997) का कहना है कि– Teaching styles refer to 'a teachers preferred way to soling-problems, carrying out tasks, and making decisions in the process-of teaching'.

इस सन्दर्भ में Gafoor & Haskar (2012) का मत है कि– Teaching style represents those enduring personal qualities and behaviors that appear in teachers conduct their classes.

Brookfield (1990 p-4) के अनुसार –Teaching style is defined as 'a mode of expression in which the teacher achieves the balance between developing a guiding vision that informs our teaching and responding flexibility to different content'.

अतः सक्रिय और सकारात्मक शिक्षण शैली के परिणाम स्वरूप छात्रों में सिखने की अभिप्रेरणा जायेगी तथा निःरसता घटेगी एवं सीखने की उपलब्धि बढ़ेगी। चूंकि इस विषय से संबंधित भारतीय परिप्रेक्ष्य में प्रयोग सिद्ध अध्ययनों का अभाव है इसलिए वर्तमान शोध समस्या का चयन किया गया।

साहित्य समीक्षा (Review of Related Literature) :

शिक्षण शैली (Teaching Style) की अवधारणा का प्रचलन 1950 ई. के लगभग प्रारम्भ हुआ जब शिक्षा–मनोवैज्ञानिकों ने यह महसुस किया कि विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर विभिन्न शिक्षण शैली का अलग–अलग प्रभाव

पारवी कुमारी

Scanned with OKEN Scanner

पड़ता है। Biggs (2001), प्रसाद (2015) का मत है कि शिक्षण शैली की अवधारणा का उत्पत्ति (appearance) 1970s के आस–पास हुआ जब शिक्षा शास्त्रियों का ध्यान शिक्षण तथा अधिगम पर शिक्षण शैली के प्रभाव पर गया।

Goldstein & Blackman (1978) Messick, (1984) एवं प्रसाद (2015) ने पाया कि पढ़ाने वाले की चिंतन शैली का पाठ्य को समाधान करने की शैली का छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

Hidalgo & Cabrillana and Lopez & Mayan (2018) ने प्रारंभिक शिक्षा के विद्यार्थियों पर प्रचलित व्याख्यान शैली तथा आधुनिक तकनीकी युक्त शिक्षण शैली के तुलनात्मक प्रभाव के अध्ययन में आधुनिक तकनीकी युक्त शिक्षण शैली को अपेक्षाकृत अधिक प्रभावकारी पाया। इसी तरह Atma et al - (2021) ने भी 5 वीं कक्षा के 141 बच्चों पर अध्ययन कर पाया कि शिक्षण शैली तथा अधिगम उपलब्धि के बीच सकारात्मक सहसंबंध है।

शोध कथन :

"माध्यिमक विद्यालयों में अध्यापनरत अध्यापकों के शिक्षण शैली का अध्ययनरत विद्यार्थियों की अधिगम उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।"

अनुसंधान में युक्त शब्दों का परिभाषीकरण:

1. माध्यमिक विद्यालय : बिहार सरकार के अधीन संचालित वर्ग 9–10 हेतू विद्यालय माध्यमिक विद्यालय कहलाते है।
2. अध्यापनरत अध्यापक : माध्यमिक विद्यालयों में वर्ग 9–10 को विभिन्न विषयों को पढ़ाने वाले शिक्षक अध्यापनरत अध्यापक कहलाते है।

Kalyani Kumari

पार्वती कुमारी

Scanned with OKEN Scanner

3. शिक्षण शैली : अध्यापन हेतु शिक्षण कार्य के लिए उपयोग में आनेवाली विद्यार्थी केन्द्रित एवं अध्यापक केन्द्रित विधियाँ शिक्षण शैली कहलाता है।
4. अध्ययनरत विद्यार्थी : माध्यमिक विद्यालयों में वर्ग 9–10 में पढ़ने वाले शिक्षार्थी अध्ययनरत विद्यार्थी कहलाते है।
5. अधिगम उपलब्धि : अध्ययनरत विद्यार्थियों के द्वारा प्राप्त ज्ञान बोध अनुप्रयोग, कौशल अधिगम उपलब्धियाँ कहलाते हैं।

अध्ययन उद्देश्य (Objective of the Study) :

वर्तमान शोध के निम्नलिखित मुख्य उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं –

- माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत अध्यापकों के शिक्षण शैली को ज्ञात करना।
- विद्यार्थियों के अधिगम उपलब्धि पर अध्यापकों के विभिन्न शिक्षण शैली के प्रभावों को ज्ञात करना।
- गुणवत्तापूर्ण अध्यापन हेतु अध्यापकों के प्रभावी शिक्षण शैली ज्ञात करना।

अनुसंधान हेतु परिकल्पनाएँ (Research Hypothesis) :

प्रस्तावित अनुसंधान की योजना की रुपरेखा (Research Design) के निर्धारण एवं चयन के लिए निम्नलिखित (Testable) परिकल्पनाएं प्रस्तावित हैं–

- अध्यापकों की शिक्षण शैली के परिणामस्वरूप छात्रों में सकारात्मक अधिगम अभिप्रेरणा विकसित होगी।

Kalyani Kumari

पारवी कुमारी

Scanned with OKEN Scanner

- अध्यापकों के शिक्षार्थी केन्द्रित शिक्षण शैली के परिणामस्वरूप विद्यार्थियों में अभिरूची बढ़ेगी।
- अध्यापकों के अध्यापक केन्द्रित शिक्षण शैली के परिणामस्वरूप विद्यार्थियों में निःसरता बढ़ेगी।
- विभिन्न शिक्षण शैली का विद्यार्थियों के अधिगम उपलब्धि पर भिन्न–भिन्न प्रभाव पड़ेगा।

शोध क्रियाविधि (Research Methodology) :

- प्रस्तावित शोध अध्ययन हेतु वर्णनात्मक अनुसंधान के सर्वेक्षण विधि एवं प्रयोगात्मक विधि का उपयोग किया जाएगा।
- प्रतिदर्शन के प्रकार, आकर एवं अभिलक्षण (Sampling type, size, and characteristics)–बिहार राज्य के मधुबनी जिला के सरकारी माधयिमक विद्यालयों से 10वीं कक्षा में पढ़ानेवाली दोनों योन के कम से कम 300 अध्यापकों का चयन उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन विधि से किया जाएगा।
- अध्यापकों का प्रशिक्षण– कम से कम 6 सामाजिक विज्ञान पढ़ानेवाले अध्यापकों को दोनों शिक्षण शैली से पढ़ाने का प्रशिक्षण शोधार्थी एवं विषय विशेषज्ञों द्वारा दिया जाएगा।
- चयनित छात्रों को यादृक्षिक (randomly) विधि से दो समूहों में बाँट दिया जाएगा। एक समूह को शिक्षक केन्द्रित शिक्षण शैली से पढ़ाया जाएगा तथा दूसरे समूह को शिक्षार्थी केन्द्रित शिक्षण शैली से पढ़ाया। एक यूनिट खत्म होने के पश्चात् अधिगम उपलब्धि परीक्षण द्वारा विद्यार्थियों की अधिगम उपलब्धि की माप की जाएगी।

पारखी कुमारी

- उपकरण –
    - छात्रों के अधिगम उपलब्धि मापने के लिए एक उपलब्धि परीक्षण का निर्माण शोधार्थी द्वारा किया जाएगा।
    - अध्यापकों के अध्यापन शैली की माप हेतु एक स्केल (Scale) का निर्माण शोद्यार्थी द्वारा किया जाएगा।

सांख्यिकीय विश्लेषण :

प्रस्तावित परिकल्पनाओं की जाँच हेतु Parametric Product Moment Correlation तथा Non Parametric Contingency Coefficient (C) का उपयोग किया जोगा।

परिसीमन (Delimitation) :

वर्तमान शोध अध्ययन को बिहार राज्य के मधुबनी जिला के सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 10वीं में अध्यापनरत अध्यापकों तक ही सीमित रखा जाएगा, अतएव इसके परिणाम सिर्फ माध्यमिक विद्यालय पर ही विशेष रूप से लागु होंगे।

प्रतिवेदन का प्रारूप (Format of Report) :

प्रस्तावित अनुसंधान की सम्पूर्ण कार्य वृत्ति को निम्नांकित अध्यायों में प्रस्तुत किया जायेगा –

अध्याय एक – परिचय (Introduction)
अध्याय दो – संबंधित साहित्य समीक्षा (Review of Related Literature)
अध्याय तीन – अनुसंधान क्रियाविधि (Research Methodology)
अध्याय चार – परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या
अध्याय पांच – सारांश एवं निष्कर्ष (Summary and Conclusion)
संदर्भ सूची – (References List)

Kalyan Kumari

मालती कुमारी

Scanned with OKEN Scanner

Bibliography :

- Grasha, A.F. (1996) Teaching with style, Pittsburg, PA; Alliance publisher.
- Mishra, R.C. (2007) Teaching styles, APH publishing corporation, New Delhi.
- Myron H.Dembo, (1998) Teaching for learning applying educational psychology in the classroom, good, year publising co;3rd ed.
- Prasad S., (2015) : 'A study of teaching style and students' academic achievements in science Ph.D.Thesis, NOU, Patna.

Kalyani Kumari

शोध निर्देशक

शोधार्थी

पारुली कुमारी

PAT 2021-22
Roll No. 22060289
Class Roll - 26

Scanned with OKEN Scanner